''नशीली दवाओं का साम्राज्य''

कुल लेन–देन के मामले में अवैध दवाओं का कारोबार विश्व का सबसे बड़ा व्यवसाय हो सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय नारकोटिक्स नियंत्रण समिति की रिपोर्ट के अनुसार यह व्यवसाय 500 अरब अमेरिकी डालर का है। अन्य मालों की तरह नारकोटिक्स का भी विश्वका सबसे बड़ा आयातक अमेरिका है जो उसके लिए 100 अरब अमेरिकी डालर से अधिक खर्च करता है। चूँकि नारकोटिक्स व्यापार अधिकतर डॉलर में संचालित होता है इसलिए 'डॉलर' को विश्वव्यापी बादशाहत देने में इसका महत्वपूर्ण योगदान होता है। इस प्रकार विश्व की सबसे ज्यादा पसंद की जाने वाली मुद्रा (डालर), विश्व के केन्द्रीय बैंकों से ज्यादा विश्व की गलियों में बनती है।

पश्चिमी उच्च वर्गों में आनंददायक दवा के रूप में कोकीन पसंद की जाती है जबकि विकासशील देशों के छोटे अनुकरणशील उच्च वर्गों में हीरोइन पसंद की जाती है जो वास्तव में पूरे विश्व के सामान्य लोगों की प्रिय आनंददाय दवा है। जर्मनी की 'बेयर फार्माक्यूरिकल कंपनी' ने सबसे पहले 1879 ई. में हिरोइन बनाया था। हिरोइन मूलतः ग्रीक भाषा के 'हीरोस' शब्द से बना है जिसका मतलब होता है आधा ईश्वर आधा मनुष्य। इस नाम के पीछे कारण यह था कि इस दवा को लेनेवाला खुद को हीरो समझने के भ्रम से ग्रस्त हो जाता था। बहरहाल, यह चाहे कोकीन हो या हिरोइन हो या कोई भी नयी बनी (नवनिर्मित) आनन्ददायक दवा–जैसे कि एम्फेटामाइन्स– हो, लगभग इन सभी का प्राथमिक उत्पादन विश्व के कुछ सबसे गरीब एवं कुशासित देशों में होता है चाहे यह कोका की पत्तियों से बने या अफीम के पोस्ते से। दुर्भाग्यवश इस व्यवसाय से उत्पन्न विशाल धन का बहुत थोड़ा हिस्सा इसके प्राथमिक उत्पादकों तक पहुंच पाता है। दूसरे मालों के व्यवसायों के विपरीत नारकोटिक्स व्यवसाय में इसके प्रत्येक चरण में बहुत ऊँचा मूल्य जोड़ने वाले कारक मौजूद होते हैं और इसका

उत्पादन सबसे प्रारंभिक और सबसे आसान चरण होता है। यही कारण है कि इस व्यवसाय से जुड़े होने के बाद भी बर्मा, अफगानिस्तान, पेरू, कोलंबिया और यहां तक कि पाकिस्तान भी वित्तीय रूप से खराब हालत में है।

विश्व के कोकीन उत्पादन के सभी बड़े केन्द्र दक्षिण अमेरिका में स्थित है। संयुक्त अमेरिका के कुल वार्षिक खपत का तीन चौथाई (75 प्रतिशत) भाग (जिसकी कीमत लगभग 45 अरब अमेरिकी डॉलर होगी) कोलंबिया से आता है। ब्रिटेन के 'राष्ट्रीय अपराध गुप्त सूचना सेवा' के अनुसार दिसम्बर 2001 में एक ग्राम कोकीन का गली खुदरा मूल्य 96 अमेरिकी डालर था जबकि हिरोइन का मूल्य थोड़ा अधिक 100 डालर था।

1990 से गली मूल्यों के लगातार घटते जाने के प्रमाण मिलते हैं जब कोकीन और हिरोइन के समतुल्य मूल्य आज के मूल्यों से 50 प्रतिशत अधिक थे। यह अच्छी खबर है या खराब यह इस पर निर्भर करता है कि आप इस समस्या को कैसे देखते हैं। यह केवल इस बात का सूचक है कि ऐसा उत्तम एवं अधिक दक्ष उत्पादन से संभव विशाल उपलब्धता के कारण हुआ है न कि मांग में कमी के कारण। इसकी अनुमानित खपत में 12 प्रतिशत की अस्वास्थ्यकर वृद्धि हो रही है।

नारकोटिक्स का अकेला सबसे बड़ा उपभोक्ता होने के कारण विश्व का सर्वाधिक सक्रिय दव आरक्षक (नियंत्रक) बनने में संयुक्त राज्य अमेरिका के बड़े स्वार्थ छिपे हुए हैं। इसकी दक्षिण अमेरिका में सक्रिय निषेध योजनाएँ हैं जो, जो न केवल सैनिक सहयोग रखती है बल्कि विभिन्न लैटिन अमेरिकी सरकारों को विशाल धनराशि देती हैं। अमेरिकी सिपाहियों (आरक्षकों) की कार्रवाई में, दवाओं के अवैध व्यापार में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष ढंग से लगे राजनीतिक नेताओं के कार्यालयों का जबरन बन्द करवाना भी

शामिल है। जब पनामा में मैनुएल नौरेगा की गिरफ्तारी को खूब प्रचारित किया गया था, अमेरिका ने 1998 में कोलंबिया के राष्ट्रपति, अर्नेस्ट सैम्पर के काली उत्पादक संघ से जुड़ाव को विस्तार से प्रमाणित किया था। काली देश के दो सबसे बड़े दवा उत्पादक संगठनों में से एक है। अंतराष्ट्रीय नारकोटिक्स नियंत्रण के लिए अमेरिका कुल 94 करोड़ 80 लाख डॉलर की कुल मदद देता है जिसमें से अकेले दक्षिण अमेरिका के हिस्से में 76 करोड़ 20 लाख डालर खर्च किये जाते हैं। इसके अलावे पेंटागन सैनिक सहायता पर एक अरब डालर खर्च करता है। कुल मिलाकर नारकोटिक्स नियंत्रण पर अमेरिका प्रति वर्ष 19 अरब डॉलर खर्च करता है।

इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि अमेरिका का सारा प्रयास कोकीन व्यापार पर अधिकार करने और इसके उत्पादन को अपने नियत्रंण में लेने का है। इस प्रयास के स्पष्ट कारण हैं। कोकीन के 800 उपभोक्ताओं के सर्वेक्षण से पता चलता है कि एक औसत उपभोक्ता ''31वर्ष उम्र का, गोरा, कुछ महाविद्यालयी शिक्षा के साथ एक मध्यमवर्गीय पुरुष था जिसकी वार्षिक आय औसत से काफी अधिक थी। सबसे खतरनाक बात किशोरों (बच्चों) में, विशेष रूप से हाई स्कूल के बच्चों में इन दवाओं के उपयोग का बढ़ना था। राष्ट्रपति जार्ज बुश की भतीजी, फ्लोरिडा के गवर्नर जेब बुश की बेटी के दवाओं के लत की समस्या काफी प्रचारित हुयी थी।

दूसरी ओर हिरोइन गरीब लोगों की प्रिय दवा है। स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जॉन काप्लान हिरोइन उपभोक्ताओं का अध्ययन कर बताते हैं कि इनमें से 75 प्रतिशत पुरुष थे, 55 प्रतिशत काले थे, 44 प्रतिशत स्पेनिशभाषी थे, 36 प्रतिशत लोग तीस साल से कम उम्र के थे, 61 प्रतिशत लोगों ने ग्यारह वर्षसे कम समय शिक्षा को दिया था अर्थात् हाई स्कूल स्तर के थे, और सबसे महत्वपूर्ण बात कि 81 प्रतिशत लोग बेरोजगार थे। यह बिल्कुल साफ है कि ये लोग निम्नवर्गीय थे और इसी कारण इनका

महत्व नहीं था। अमेरिका के अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों का चरित्र पूरी तरह स्पष्ट है जो अमेरिकी प्रशासन के पक्षपात को प्रदर्शित करता है।

यहाँ इसका एक और कारण भी दिखाई देता है। अमेरिका में कोकीन के वितरण पर कोलंबियन गिरोहों का लगभग एकछत्र राज है जो काफी हिंसक हैं और प्रचंड ढंग से बदला लेते हैं और जिन्होंने इटली के माफिया को भी इस धंधे से बाहर कर दिया। दूसरी ओर इटली का माफिया, ला कोसा नोस्ट्रा अभी भी पुराने गिरोहों पर अच्छा अधिकार रखता है जिसमें हिरोइन गिरोह भी शामिल हैं। इटली के माफिया तुलनात्मक रूप से अधिक सभ्य हैं और अखबारों में अपनी अच्छी छवि बनाए रखने के लिए प्रयास करते हैं। ये राजनीति से भी गहरे रूप में जुड़े हुए हैं और जनता के वोटों पर भी अच्छा अधिकार रखते हैं। ''जल्दी वोट डालो और बार–बार वोट डालो'' कहकर इटली की जनता को उत्साहित करने के लिए 'अल कपोन' जाने जाते थे। इस घटना के बारे में काफी लिखा गया है कि जब न्यूयार्क के गवर्नर के रूप में फैंकलिन रूजवेल्ट को 'चार्ल्स लकी लुसियानो' कहा गया था तब सिंग–सिंग जेल में दान के लिए विशाल अभियान चला था और निर्णायक सहयोग मिला था।

यद्यपि, अफीम के परिष्करण (शोधन) से बनने वाली हिरोइन दक्षिण अमेरिका (मुख्यतः मेक्सिको) में भी पैदा की जाती है पर उत्पादन का बड़ा भाग एशिया में स्थानान्तरित हो गया है। आज दो बड़े उत्पादक केन्द्र स्वर्णिम त्रिभुज (ट्रिंगल) और स्वर्णिम चाप (क्रेसेन्ट) हैं। स्वर्णिम त्रिभुज का संबंध अफीम पोस्ता उत्पादन और हिरोइन निर्माण के लिए अलग की गयी उत्तरी वर्मा, थाईलैण्ड और लाओस की बदनाम भूमि से है जबकि गोल्डन क्रेसेन्ट का सम्बन्ध (स्वर्णिम चाप), पाकिस्तान और अफगानिस्तान के सीमावर्ती उबड़–खाबड़ क्षेत्र से है। इन दो स्वर्णिम क्षेत्रों के बीच में भारत पिस रहा है। यह आश्चर्यजनक नहीं है कि कई भारतीय इस सोने का कुछ भाग पाने के लिए ललचा रहे हैं। यह बड़ा मसला है।

भारत की सामरिक स्थिति, इसे एसिटिक एनहाइड्राइड का बड़ा उत्पादक बनने की भी शक्ति देती है जिसकी मार्फिन से शुद्ध हिरोइन के निर्माण में बहुत जरूरत होती है। एसिटिक एनहाइड्राइड, एन–एसिटिलएनथ्रेनिलिक एसिड के संश्लेषण में भी काम आती है इसलिए मेथाक्वानोल के लिए भी महत्वपूर्ण हो जाती है। यह मेथाएम्पेटामाइन और एम्पेटामाइन के लिए भी आवश्यक हे क्योंकि 1–फिनाइल, 2– प्रोपेनोन के निर्माण में इसका उपयोग होता है। भारत में एसिटिक एनहाइड्राइड के उत्पादन का 80 प्रतिशत से अधिक भाग उत्तर प्रदेश देता है जहां लगभग दर्जन भर कंपनियां इसका उत्पादन करती हैं। गजरौला की वाम औरगेनिक्स हिन्दुस्तान टाइम्स के मालिक से संबंधित है और गाजियाबाद की इस्टर इंडिया (केमिकल्स) के मालिक के रूप में समाजवादी पार्टी नेता अमर सिंह का नाम लिया जाता है। ये दोनों एसिटिक एनहाइड्राइड की बड़ी उत्पादक हैं। यू.एस.डी.ई.ए. और यू.एन.एन.सी.बी. कुछ ब्यौरों के साथ बताती है कि नारकोटिक्स निर्माण में अवैध प्रयोग के लिए जाली वितरकों और उत्पादकों का संगठन किसप्रकार एसिटिक एनहाइड्राइड का निर्माण कर रहा है। यह सबको पता है कि भारत का एसिटिक एनहाइड्राइड का उत्पादन इसके वैध उपयोग की जरूरतों से कई गुणा अधिक है।

एक टन हिरोइन के निर्माण के लिए दस टन से अधिक अफीम की जरूरत पड़ती है। यू.एन.डी.सी.पी. के अनुसार 1997में एशिया का 2.65 लाख हेक्टेयर क्षेत्र अफीम उत्पादन में लगा था जिसने 4861 टन अफीम का उत्पादनकिया। पिछले वर्ष अफगानिस्तान ने अकेले 5600 टन अफीम का उत्पादन किया। ओसमा बिन लादेन को जिंदा या मुर्दा पकड़ने के अमेरिका के लक्ष्य के साए में करजई सरकार अफीम उत्पादन पर नियंत्रण रखने में सक्षम हो सकेगी, इसमें संदेह है। कहीं ऐसा न हो कि नाजुक स्थिति से गुजर रहे अपने युद्धनेता मित्र राष्ट्रों का विश्वास खो दें।

अभी भी अमेरिका और इसकी अफगानी कठपुतली सरकार यह भरोसा दिलाने में लगे हुए हैं कि वे अफगानी वित्त व्यवस्था का अफीमीकरण घटाने के लिए जी–तोड़ मेहनत कर रहे हैं। अफीम उत्पादन का प्रत्येक हेक्टेयर एक अफगानी कृषक को लगभग 16000 अमेरिकी डालर का लाभ देता है जबकि दूसरी ओर एक हेक्टेयर का फसल नष्ट करने के लिए अफगानी किसान को 1250 डालर का लालच दिया जा रहा है। कहने की जरूरत नहीं कि अफगानी किसान व्यवसाय की इतनी समझ तो रखते ही हैं।

अफगानिस्तान और बर्मा अब पूरे विश्व के 90 प्रतिशत और अवैध अफीम पोस्ता खेती के 80 प्रतिशत भाग पर अधिकार रखते हैं। अमेरिकी सरकार के अनुसार विश्व के 60 प्रतिशत हिरोइन का उत्पादन बर्मा करता है जो कि अफगानिस्तान द्वारा पैदा किये जा रहे हिरोइन का दुगुना है। यह एक बड़ी विडंबना है कि हिरोइन उत्पादन उन दो क्षेत्रों में केन्द्रित है जो सी.आई.ए. के साम्यवाद को रोकने वाले एकमात्र लक्ष्य से सीधे जुड़ते हैं।

1100 ई. के आस–पास अरब के लोग अफीम लेकर भारत आए, तब से अफीम और इससे बने पदार्थों ने इतिहास और अर्थतंत्र को इस तरह संचालित किया है कि धर्म और विचारधाराओं के प्रचारक इससे ईर्ष्या करेंगे। सोलहवीं शताब्दी में पुर्तगालियों ने अफीम का स्वाद जावा में गुलाम चीनी मजदूरों को चखाया। तब यह चीन में फैला। ईस्ट इंडिया कंपनी ने पुर्तगालियों से इसका व्यापार छीन लिया और 1838 से बंगाल, प्रतिवर्ष चीन को 2400 टन अफीम निर्यात करता था। जब चीन ने इस व्यापार को बंद करने का प्रयास किया तब बिटिशों ने ''राजनयिक समानता'' और 'मुक्त व्यापार' के सिद्धान्तों को सुरक्षित रखने के लिए 1839–41 में पहला अफीम युद्ध लड़ा। तब चीन ने अफीम के आयात से बचने के लिए यूनान क्षेत्र में अफीम उत्पादन की अनुमति दे दी। इस प्रयास में वह सफल रहा। किंतु 1949 ई. में जब कम्युनिस्ट सत्ता में आए, के.एम. टी. समुदाय के दक्षिण चीन में कमजोर हो जाने के साथ अफीम खेती बर्मा की ओर

चली गयी। 1950 में सी.आई.ए. ने दक्षिण चीन पर प्रायोजित आक्रमण के नाम पर शान राज्य में के.एम.टी. शक्तियों का पुनर्गठन किया। तब यह व्यापार थाइलैंड के समुदायों तक फैल गया। नशीली दवाओं, सी.आई.ए. द्वारा मुहैया कराए गए हथियारों और घने जंगल ने बर्मा में कई आतंकवादी संगठनों को पैदा किया। विश्व के ज्ञात 387 आतंकवादी एवं विद्रोही संगठनों में से अकेले वर्मा में 40 से अधिक संगठन हैं।

अफगानिस्तान और उत्तर पश्चिमी पाकिस्तान में बहुत पहले से अफीम पोस्ते की खेती होती रही है किन्तु 1978 में जब साम्यवाद को समाप्त करने के लिए जेहाद का नारा देती सी.आई.ए. वहाँ पहुंचती है तो अफीम उत्पादन को विशाल प्रोत्साहन मिलता है। राष्ट्रपति जिम्मी कार्टर अफगानिस्तान के सोवियत कार्यों का वर्णन करते हुए कहते हैं ''यह शक्तिशाली नास्तिकों की सरकार द्वारा स्वतंत्र इस्लामी जनता को गुलाम बनाने के लिए जानबूझ कर किया गया प्रयास है।'' उनके कम धूर्त, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार ज्बिग्नेव ब्रजेजींस्की ये लिखते हुए ज्यादा ईमानदार लगते हैं कि, ''अब हमारे पास सोवियत संघ को उसका वियतनाम दे देने का मौका है।'' और वे ऐसा करते हैं। नशीली दवा व्यापार के प्रमुख शोधकर्त्ता अल्फ्रेड मैकॉय के अनुसार ''अफगानिस्तान में सी.आई.ए. की दखल के मात्र दो वर्ष के भीतर पाकिस्तान–अफगानिस्तान सीमावर्ती क्षेत्र विश्व का सबसे बड़ा हिरोइन उत्पादक हो गया जो अमेरिकी मांग का 60 प्रतिशत पूरा करता है।'' और ओसामा बिन लादेन को भी पकड़ने का कार्य करता है।

अब यह हिरोइन व्यवसाय पाकिस्तान के लिए प्रति वर्ष 2 अरब डालर से अधिक धन जुटाता है। सस्ती हिरोइन की बाढ़ के कारण, जहाँ 1979 में पाकिस्तान में हिरोइन का एक भी नशेड़ी नहीं था वहीं आज लगभग 30 लाख हैं। भारत, हिरोइन (स्मैक) के अवश्यम्भावी हमले से बच नहीं पाया और हमारे पास 1998 में तीन लाख पंजीकृत नशेड़ी थे। नशेड़ियों की वास्तविक संख्या इसकी बीस गुनी हो सकती है। अफगानिस्तान ऑपरेशन में बड़ी भूमिका निभाने वाले सी. आई. ए. के चार्ल्स कोगन का

कहना है कि, ''मैं नही समझता कि इसक लिये हमें माफी मांगने की जरूरत हैं। इसकी सारी स्थितियां हाथ से निकल चुकी हैं।'' कथन का दूसरा भाग सच बयान करता है। और अब ''धर्म जनता के लिये अफीम है'' के स्थान पर ऐसा लगता है कि इसका उल्टा हो गया है।

MOHAN GURUSWAMY
3515 DLF 4, Gurgaon 122002, Haryana
Email: mguru@satyam.net.in